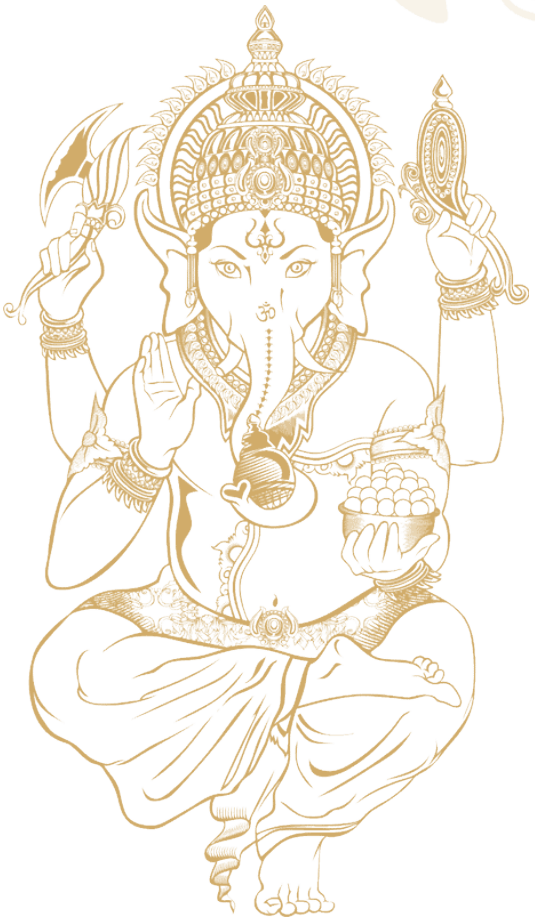

# Anvika

30 Oct 2025

08:48 AM

Bhilai

**Model: Baby-Horoscope** **Order No: 120248701**

**दिनांक** 30/10/2025 **वेल** 08:48:08 **वार** गुरुवार **स्थान** Bhilai **लाहिरी अयनांश** : 24:13:07
**अक्षांश** 21:13:00 उत्तर **रेखांश** 81:26:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:16 कला

| पंचांग | | अवकहड़ा चक्र | |
|---|---|---|---|
| साम्पातिक वेल | 11:18:40 घं | गण | देव |
| वेलान्तर | 00:16:23 घं | योनि | वानर |
| सूर्योदय | 06:06:26 घं | नाड़ी | अन्त्य |
| सूर्यास्त | 17:29:22 घं | वर्ण | वैश्य |
| चैत्रादि संवत | 2082 | वश्य | जलचर |
| शक संवत | 1947 | वर्ग | मांजर |
| मास | कार्तिक | युँजा | अन्त्य |
| पक्ष | शुक्ल | हंसक | भूमि |
| तिथि | 8 | जन्म नामाक्षर | खे–ख्याल |
| नक्षत्र | श्रवण | पाया(रा.–न.) | ताम्र–ताम्र |
| योग | गण्ड | होरा | सूर्य |
| करण | बव | चौघड़िया | रोग |

## विंशोत्तरी

**चन्द्र 3वर्ष 11मा 3दि**

**चन्द्र**
**30/10/2025**
**03/10/2029**

| | |
|---|---|
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 30/10/2025 |
| बुध | 03/01/2027 |
| केतु | 04/08/2027 |
| शुक्र | 04/04/2029 |
| रवि | 03/10/2029 |

## योगिनी

**मंगळा 0वर्ष 4मा 21दि**

**मंगळा**
**30/10/2025**
**22/03/2026**

| | |
|---|---|
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 30/10/2025 |
| सिद्धा | 31/12/2025 |
| संकटा | 22/03/2026 |

| ग्रह | व | अ | अंश | राशि | नक्षत्र | पद | स्वामी | अं. | स्थिति | षट्बल | चर | स्थिर | ग्रह तारा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | 17:49:03 | वृश्चि | ज्येष्ठा | 1 | बुध | बुध | ––– | 0:00 | | | |
| सूर्य | | | 12:44:30 | तुला | स्वाति | 2 | राहु | बुध | नीच राशि | 1.35 | भ्रातृ | पितृ | विपत |
| चंद्र | | | 18:05:48 | मक | श्रवण | 3 | चंद्र | बुध | सम राशि | 1.07 | अमात्य | मातृ | जन्म |
| मंगळ | | | 01:55:29 | वृश्चि | विशाखा | 4 | गुरु | राहु | स्वगृही | 1.31 | पुत्र | भ्रातृ | क्षेम |
| बुध | | | 06:27:37 | वृश्चि | अनुराधा | 1 | शनि | बुध | सम राशि | 1.32 | मातृ | ज्ञाति | प्रत्यारि |
| गुरु | | | 00:40:32 | कर्क | पुनर्वसु | 4 | गुरु | मंगळ | उच्च राशि | 1.16 | कलत्र | धन | क्षेम |
| शुक्र | | | 26:01:08 | कन्या | चित्रा | 1 | मंगळ | राहु | नीच राशि | 1.10 | आत्मा | कलत्र | सम्पत |
| शनि | व | | 01:39:53 | मीन | पू.भाद्रपद | 4 | गुरु | राहु | सम राशि | 0.83 | ज्ञाति | आयुष्य | क्षेम |
| राहु | | | 22:47:39 | कुंभ | पू.भाद्रपद | 1 | गुरु | शनि | मित्र राशि | | ––– | ज्ञान | क्षेम |
| केतु | | | 22:47:39 | सिंह | पू.फाल्गुनी | 3 | शुक्र | शनि | शत्रु राशि | | ––– | मोक्ष | मित्र |

## लग्न–चलित

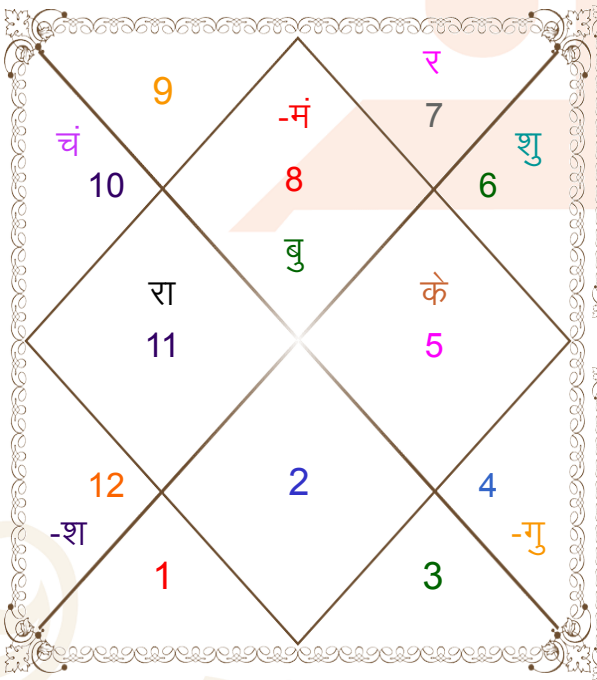




## चन्द्र कुंडली

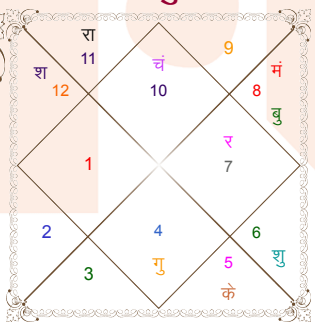




## नवमांश कुंडली

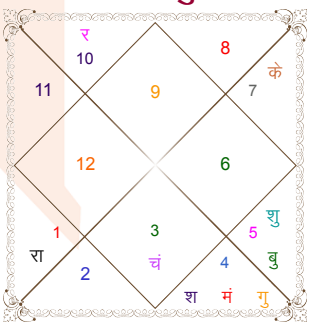




## सर्वाष्टकवर्ग

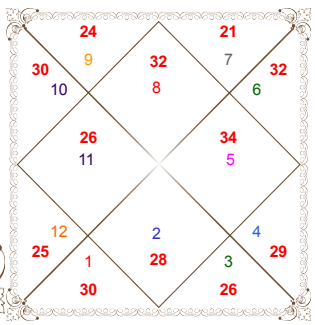




## दशमांश कुंडली

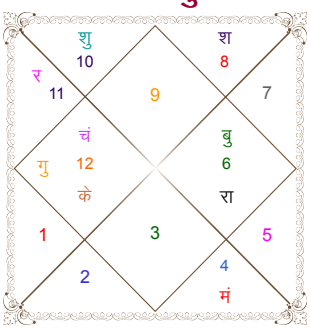

# नक्षत्रफल

आप श्रवण नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ण वैश्य, गण देव, वर्ग मार्जार तथा योनि वानर होगी। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "खे" या "खै" अक्षर से होगा।

आप विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के ज्ञानार्जन में रूचिशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक इनका ज्ञान प्राप्त करेंगी। आपकी पुत्र संतति कन्या संतति की अपेक्षा अधिक रहेगी। साथ ही आपके मित्रों की संख्या भी अधिक ही रहेगी एवं इनसे आप समय समय पर सहयोग प्राप्त करते रहेंगे। सज्जन पुरूषों एवं विद्वानों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी तथा समयानुसार उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके शत्रु हमेशा आपसे पराजित रहेंगे एवं आपका सामना करने में वे प्रायः असमर्थ ही होंगे। इसके साथ ही धार्मिक ग्रन्थों तथा पुराणों आदि के श्रवण में भी आपकी रूचि रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इनका श्रवण करती रहेंगी।

**शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्ति विजितारिपक्षः।**
**प्राणी पुराणश्रवण प्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में सलंग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा एवं सेवा की भावना रहेगी तथा अवसरानुकूल आप इनकी श्रद्धापूर्वक सेवा तथा पूजा करने के लिए उद्यत रहेंगी। आप एक धनाढ्य महिला होंगी तथा आनन्द पूर्वक जीवन में धर्म का उपभोग करेंगी। इसके साथ ही आप अपनी बुद्धि तथा योग्यता के बल पर किसी उच्चाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित पद को प्राप्त भी कर सकेंगी। आप एक धर्मनिष्ठ महिला होंगी तथा यत्नपूर्वक इसका जीवन में अनुपालन करती रहेंगी।

**श्रावणायां द्विजदेवभक्तिनिरतो राजा धनी धर्मवान।**
**जातक परिजातः**

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज में आप एक प्रतिष्ठित एवं गणमान्य महिला होंगी तथा सभी लोग आपको हादिक आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। विविध शास्त्रों में पारंगत होने के कारण आप एक विदुषी के रूप में भी आदरणीय रहेंगी तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। आप के मन में उदारता की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द

लोगों के प्रति आप अपनी इस प्रवृति का पालन करेंगी एवं उन्हें यथा शक्ति सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आप एक धनवान बुद्धमान एवं गुणवान पुरूष की पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त करेंगी तथा सम्पूर्ण सुख संसाधनों से युक्त हो कर आनन्द पूर्वक अपना गृहस्थ जीवन व्यतीत करेंगी।

**श्रीमाञ्छ्रवणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।**
**बृहज्जातकम्**

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पंडित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

आप कृतज्ञता के सद्गुण से भी सुशोभित रहेंगी तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा हृदय से उनका आभार भी प्रकट करेंगी। आपके इस सद्गुण से अन्य भी आपसे प्रभावित होंगे एवं आपका सम्मान भी करेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। साथ ही आपकी सन्ततियां भी अधिक होंगी। आप सर्व गुणों से सुसम्पन्न होगी तथा आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

**कृतज्ञः सुभगोदाता गुणैः सर्वैश्च संयुक्तः।**
**श्रीमान सन्तानबहुलः श्रवणे जायते नरः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आप ताम्र पाद में पैदा हुई हैं। अतः आप आजीवन धनैश्वर्य से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा साथ ही सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। काव्य क्षेत्र में आप रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में सफलता भी अर्जित करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके अत्यन्त ही मधुर संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। नवीन वस्त्रों को धारण करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा समय समय पर इसका संग्रह भी करेंगी। शरीर से आप पूर्ण बलशाली तथा स्वस्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा आपके प्रभुत्व को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यों को करने में भी आप उत्सुक रहेंगी। जीवन में आप प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगी लेकिन स्वभाव में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी तथा भाग्य से प्रबल रहेंगी।

मकर राशि में पैदा होने के कारण आपका कद ऊंचा रहेगा एवं ललाट भी विस्तृत होगा। आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय होगी एवं आखें भी सुन्दर तथा आकर्षक रहेंगी। संगीत के प्रति आपके मन में विशेष सम्मान रहेगा तथा इसमें आप विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगी। शीत से आप व्याकुलता की अनुभूति करेंगी तथा प्रायः इसको सहन करने में असमर्थ रहेंगी। आप की सत्य के प्रति गहन श्रद्धा होगी तथा नित्य सत्यानुपालन में रत रहेंगी। अन्य जनों के

समक्ष प्रदर्शन करने के लिए आप धर्म के प्रति अपना श्रद्धाभाव प्रदर्शित करेंगी एवं उसका आचरण भी करेंगी। समाज में सभी वर्गो के साथ आपका मधुर व्यवहार रहेगा एवं इनसे आपको पूर्ण मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी रहेगी। आप में क्रोध का भाव अल्प मात्रा में ही रहेगा। सभी लोगों से आप प्रेम एवं स्नेह का भाव रखेंगी तथा घृणा एवं वैमनस्य के भाव का आप में प्रायः अभाव ही रहेगा। आप अपनी आयु से अधिक आयु के लोगों से मित्रता संबंध करने के लिए उत्सुक होगी तथा गहन मैत्री भी इन्हीं से रहेगी। लेखन कार्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा काव्य सृजन के क्षेत्र में आप सफलता एवं ख्याति अर्जित कर सकेंगी। आप में उत्साह के भाव की भी अल्पता रहेगी एवं लालची प्रवृति होने से आप कभी कभी अनावश्यक समस्याएं भी अपने लिए उत्पन्न करेंगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोऽल्परोषो मनसिभवयुतो निर्घृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोऽतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोऽतिकर्णः।।
सारावली

आपका अधिकाँश समय अपने परिवार के पालन में ही व्यतीत होगा। आप शीघ्र ही दूसरे लोगों की बातों से सहमत हो जाएंगी तथा उनके कथनानुसार ही उसका आचरण करने के लिए भी तत्पर रहेंगी आप स्वभाव से आलसी भी होंगी अतः आपके कार्य विलम्ब से ही सम्पन्न होंगे। परन्तु आपका भाग्य प्रबल रहेगा। अतः कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही भाग्यबल से सम्पन्न हो जाएंगे। घूमने फिरने एवं यात्रा करने में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा आपका अधिकाँश समय इसी में ही व्यतीत होगा। शारीरिक बल आप में मध्यम रूप से रहेगा परन्तु शौर्य गुणों से आप सुसम्पन्न होंगी। अतः कठिन कार्यों को करने तथा अगम्य स्थानों पर भ्रमण करने की आप में तीव्र इच्छा रहेगी एवं इसके लिए आप प्रयत्न शील भी रहेंगी। आप के हृदय में कोमलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त वायु से उत्पन्न होने वाले रोगों से आप प्रायः पीड़ित रहेंगी एवं इनमें कष्टानुभूति करेंगी। साथ ही सर्वप्रकार के सत्वगुणों से आप सुसम्पन्न रहेंगी एवं सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोऽधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः।।
शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोऽगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः।।
बृहज्जातकम्

परिवार में आपकी स्थिति सम्मान प्राप्त करने में सामान्य ही रहेगी। परन्तु परिवार या कुल की मर्यादा तथा रीति को बढ़ाने में आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगी तथा इस कार्य को करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपके वश में रहेंगे तथा अधिकांश सांसारिक कार्यों को आपके कहने तथा निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे तथा स्वतंत्र निर्णय लेने में वे सर्वथा असमर्थ ही रहेंगे। आप भद्रपुरूषों से हमेशा प्रशंसा प्राप्त करेंगी एवं इनके लिए

आदरणीया भी रहेंगी। आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगी तथा जीवन में इनका पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी। भाई बन्धुओं के प्रति आपके मन में विशेष अनुराग तथा मोह रहेगा एवं इनके सहयोग के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण साथ निभाएंगी। आप एक धनाढ्य महिला होगी तथा धनैश्वर्य से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। आप में त्याग की भावना नैसर्गिक रूप से रहेगी तथा समयानुकूल परिवार तथा समाज में आप अपनी इस भावना का अनुपालन करती रहेंगी। आपका परिवार भी विस्तृत रहेगा एवं इसके सदस्यों की संख्या अधिक रहेगी। सुख संसाधनों की प्राप्ति के लिए आप प्रायः चिन्तित रहेंगी एवं उसको प्राप्त करने के लिए नित्य परिश्रम एवं प्रयत्न भी करेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आप कभी न कभी जीवन में किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी के धन सम्पति को प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक उसका उपभोग भी करेंगी। आप समाज में सभी वर्गो की भलाई के लिए समान रूप से चिन्तित रहेंगी तथा यत्न पूर्वक उनकी समस्याओं के समाधान के लिए तत्पर रहेंगी एवं तन मन धन से अपना सहयोग भी अर्पित करेंगी। साथ ही सलाह देने या आपसी मंत्रणा करने के कार्य में भी आप दक्ष रहेंगी एवं आपकी इस प्रवृति से अन्य लोग भी समय समय पर लाभन्वित होते रहेंगे। बन्धु वर्ग की आप पालनकर्ता रहेंगी तथा उनकी सब प्रकार से सेवा तथा सहायता करती रहेंगी। इसके साथ ही आप में वीरता के गुणों की बहुलता रहेगी तथा अपनी समस्त समस्याओं का साहस पूर्वक सामना करके उनका समाधान भी करेंगी।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गीतशास्त्र के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इस क्षेत्र में आपको विशेषज्ञता तथा ख्याति प्राप्त होगी। आपकी शारीरिक कान्ति एवं लावण्यता भी दर्शनीय होगी तथा इससे आपके सौन्दर्य में भी वृद्धि होती रहेगी।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी मधुरता से युक्त श्रेष्ठ रहेगी। साथ

ही आप सरल बुद्धि से युक्त रहेंगी। आप अपने विचारों को सुगमतापूर्वक अन्य जनों के समक्ष प्रकट करेंगी तथा दूसरे के विचारों को भी सुगमता से हृदय में ग्रहण करेंगी। आप अल्प मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही रुचिकर प्रतीत होगा। अन्य जनों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी विद्वानों द्वारा वर्णित सद्गुणों से सुशोभित रहेंगी। साथ ही अच्छे बुरे की पहचान करने में भी आप सक्षम रहेंगी। इसके अतिरिक्त विविध प्रकार के धनैश्वर्य से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेगी

आपका शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा तथा दानशीलता की प्रवृति आपके मन में विद्यमान रहेगी एवं समय समय पर इसका आप अनुपालन भी करती रहेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा हमेशा सादगी पूर्ण ढंग से रहने की इच्छा करेंगी। साथ ही अनावश्यक दिखावे से भी यत्नपूर्वक दूर ही रहेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न शास्त्रों की ज्ञाता होने के कारण एक श्रेष्ठ विदुषी के रूप में समाज में आपका सम्मान होता रहेगा।

**सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।**
**जायते सुरगणे ऽणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में जन्म होने के कारण आप में चंचलता के भाव की अधिकता रहेगी तथा आपके अधिकाँश कार्य चंचलता से ही सम्पन्न होंगे। मिष्ठान का भक्षण करना भी आपको प्रियकर लगेगा। धन प्राप्ति के लिए आपके मन में व्याकुलता रहेगी तथा इसको प्राप्त करते समय भी आप आतुरता का प्रदर्शन करेंगी। काम भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा आपकी सभी सन्तानें बुद्धिमान एवं गुणवान रहेंगी। अन्यजनों से विवाद आदि करने की भी आपकी प्रवृति रहेगी तथा किसी न किसी से परस्पर विवाद आदि आपका होता रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक वीर साहसी एवं निर्भीक महिला भी होंगी तथा साहस पूर्वक समय व्यतीत करेंगी।

**चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।**
**सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं

पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीडित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आथिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों , रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन

दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं आ रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए एवं शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, पंच धातु, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों के प्रभाव में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी ।

**ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।**
**मंत्र– ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।**